विकलांग मंच

विकलांग समुदाय का मार्गदर्शक पाक्षिक

वर्ष : 31 अंक: 22	जयपुर 16 मई, 2017	RNI No.: 46429/86 Po.Regn.No.:Jaipur City/207/2015-17	वार्षिक शुल्क: 50/- प्रति मूल्य:2.50 पृष्ठ-12

विकलांग मंच के आजीवन/वार्षिक सदस्य बनें एवं दूसरों को भी इसके सदस्य बनने की प्रेरणा दें

विकलांग मंच

8/141, मालवीय नगर, जयपुर-302017

फोन:0141-2547156, 8764425593, 9352320013, फैक्स:0141-4036350

E-Mail:vicklangmanch@ymail.com E-Mail:vicklangmanch@gmail.com

नेत्रदान को विशेष प्रोत्साहित किया जाये

जयपुर (कासं)। प्रदेश में अंधता निवारण कार्यक्रम के अन्तर्गत संचालित विभिन्न गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन करने के साथ ही नेत्रदान को विशेष प्रोत्साहित किया जायेगा। इसके लिए सभी आई बैंकों को सुदृढ़ बनाने के साथ ही इस कार्य में लगे नेत्र विशेषज्ञों व नेत्र सहायकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

प्रमुख शासन सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य श्रीमती वीनू गुप्ता ने स्वास्थ्य भवन में आयोजित बैठक में यह जानकारी दी। उन्होंने प्रदेश में अंधता निवारण के तहत संचालित कार्नियल ब्लाइंडनेस बैकलॉग फ्री इनिशियेटिव कार्यक्रम की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने प्रदेश के सभी आई बैंकों में उपलब्ध सुविधाओं, संसाधन, उपकरणों के बारे में जानकारी प्राप्त कर इनमें सभी सुविधायें उपलब्ध करवाने के निर्देश दिये।

अंधता निवारण कार्यक्रम की समीक्षा बैठक

श्रीमती गुप्ता ने सरकारी नेत्र विशेषज्ञों, नेत्र सहायकों एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मियों को निर्धारित मापदण्डों के अनुसार आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करने के निर्देश दिये।

उन्होंने नेत्रदान के संबंध में जागरूकता लाने के विशेष प्रयासों के साथ ही कार्नियो की खराबी के कारण दोनों आंखों में आई अंधता कार्नियल ब्लाइंडनेस के निवारण के बारे में आमजन में व्यापक प्रचार-प्रसार अभियान संचालित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

बैठक में अतिरिक्त निदेशक (अंधता) डॉ. मो. इकबाल भारती, प्रदेश की सभी सरकारी व गैर सरकारी आई बैंक के प्रतिनिधिगण सहित राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं राज्य के प्रमुख केरेटोप्लास्टी सेन्टर प्रभारी मौजूद थे।

दिव्यांगों को योगी सरकार का तोहफा, एक लाख तक का कर्ज होगा माफ

बलिया (विमं डेस्क)। उत्तर प्रदेश के पिछड़ा वर्ग एवं विकलांग कल्याण

मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने कहा कि राज्य की योगी आदित्यनाथ सरकार दिव्यांगों का एक लाख रुपये तक का कर्ज माफ करेगी। साथ ही पिछड़े वर्ग तथा दलित वर्ग में अति पिछड़ा एवं अति दलित की नई श्रेणी बनाने की कवायद की जा रही है।

राजभर ने बातचीत में दिव्यांगों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि किसानों की तरह दिव्यांगों का भी एक लाख रुपये तक का कर्ज माफ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही दिव्यांगों के हित में कदम उठाते हुए सरकार ऐसे इच्छुक लोगों को एक लाख रुपये तक का कर्ज दिलाएगी।

राजभर ने कहा कि योगी सरकार दलित तथा पिछड़े वर्ग की उपेक्षित जातियों को न्याय दिलाने के लिये विशेष पहल करने जा रही है। पिछड़ा वर्ग में अति पिछड़ा वर्ग के नाम से एक नई श्रेणी बनायी जाएगी तथा अति पिछड़ा वर्ग को पिछड़े वर्ग के 27 फीसदी आरक्षण में से 18 फीसदी आरक्षण की सुविधा दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि इसी तरह दलित वर्ग में भी अति दलित वर्ग की नई श्रेणी बनेगी तथा अति दलित वर्ग को साढ़े 22 प्रतिशत आरक्षण में 15 फीसद आरक्षण का प्रबंध किया जाएगा। सरकार ये दोनों श्रेणियां बनाने की तैयारी कर रही है। राजभर ने बताया कि प्रदेश सरकार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग को मिल रही सुविधा की तर्ज पर पिछड़े वर्ग के सभी छात्र.छात्राओ को छात्रवृत्ति का लाभ दिलाने की कवायद कर रही है।

मंत्री ने जानकारी दी कि सरकार ने दिव्यांगों का पेंशन 300 से बढ़ाकर 500 रुपये कर दिया है। इसके साथ ही दिव्यागों की समस्याओं के समाधान के लिये प्रत्येक माह के दूसरे बुधवार को समाधान दिवस आयोजित होगा।

विशेष योग्यजन निदेशक ने संभाला कार्यभार

जयपुर (कासं)। भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी श्रीमती अनुपमा जोरवाल ने विशेष योग्यजन निदेशक के पद पर पूर्व विशेष योग्यजन निदेशालय में अपना कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने अधिकारियों से बैठक लेकर विभाग द्वारा संचालित विशेष योजनाओं की योजनाओं को समीक्षा की। तथा निर्देश दिए की विशेष योजनाओं के प्रति सभी अधिकारी कर्मचारी संवेदनशील होकर काम करेंगे।

दिव्यांग सम्मान पेंशन योजना पर विशेष ध्यान:लुईश मरांडी

विमं डेस्क

देवघर। देवघर परिसदन के सभागार में सूबे के समाज कल्याण विभाग के मंत्री लुईश मरांडी ने देवघर जिला के लिए एक विशेष बैठक किया। बैठक में संबंधित विभाग के सभी अधिकारी मौजूद थे। मंत्री ने कहा की जब भी हम प्रमंडलीय बैठक करते थे तो कहीं ना कहीं देवघर छूट जाता था। इसीलिए हमने खास देवघर जिला के लिए एक बैठक का आयोजन किया ताकि यहाँ की समस्याओं की जानकारी मिल सके और इसका निवारण कर सकें। आज कि बैठक में कई निर्देश दिए गए जिसमे समाज कल्याण विभाग के तरफसे विधवा सम्मान पेंशन, वृद्धा सम्मान पेंशन एवं दिव्यांग सम्मान पेंशन योजना के तहत कोई भी व्यक्ति वंचित ना रहे।

जिले में वृद्धा सम्मान पेंशन लगभग 8 हजार लोगों को दिया जा रहा, जो कि एक अच्छा आंकड़ा है। साथ ही मंत्री ने कहा कि दिव्यांग सम्मान पेंशन योजना पर हमने विशेष ध्यान दिया है, जिसको लेकर निर्देश दिया गया। अब महीने में एक बार की जगह दो बार बोर्ड की बैठक सिविल सर्जन के साथ की जाय ताकि कोई भी दिव्यांग सर्टिफिकेट के कारण सम्मान पेंशन पाने से वंचित ना रहे। साथ ही इसकी समुचित प्रचार प्रसार किया जाय। आंगनबाड़ी केंद्रों को निर्देश दिया गया कि शत प्रतिशत केन्द्र खुले रहें अन्यथा आदेश नहीं मानने पर उनके विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

विचार मंच

आप जीवन में कुछ करना चाहते है, आगे बढ़ना चाहते है तो सिर्फ अपनी कमजोरियों को पहचान के दूर करने का प्रयास ही काफी नहीं आपको अपनी क्षमताओं को भी पहचानना होगा, खुद को भी जानना होगा और अपनी क्षमताओं से भी लाभ उठाना होगा। **-अज्ञात**

उच्च मनोबल वालों के लिये कोई भी काम कठिन नहीं

परमात्मा किसी की किस्मत नहीं बिगाडते पर कर्म विधान के अनुसार जो जैसा करता है वैसा ही पाता है। यदि भगवान दु:ख दाता होता तो सारी दुनिया में उसे प्यार से याद क्यों किया जाता। मेरा-तेरा करके हमने ही दु:खालय का निर्माण किया है। सुखों के सागर ने तो सुखमय स्वर्णिम संसार बनाया था। विकारों की बदबू घोलकर हमने ही इसे दु:खदायी बनाया तो अब हमें अब स्वयं अपना ही मित्र बनकर इसे सुखदायी बनाना पड़ेगा। अज्ञान के अंधेरे में भटकती आत्माओं को दिव्य नेत्र दे उनसे भी शत्रुता मिटानी होगी।

खान से निकले सोने से आभूषण बनाने के लिये उसे तेज भट्टी में तपाया जाता है। मटमैला सोना कुन्दन तब बनता है जब उसे ठण्डा करके बार-बार तपाया जाता है। ठोक पीट काट कुतर कर जब उसे आकर्षक आकार दिया जाता है तो गले में धारण करने योग्य हार हो जाता हैं।

हम आत्माएं भी चौरासी जन्मों का चक्र काटते-काटते मटमैला बन गयी हैं। हमारी पुकार सुनकर परम उपकारी प्रभू हमें फिर से 24 कैरेट सोने जैसे कुन्दन बनाना चाह रहे हैं। ज्ञान, योग, धारणा व सेवा से सजाकर संसार के सामने उदाहरण स्वरूप बनाना चाह रहे हैं। उन्होंने क्या-क्या सुविधाएं नहीं दी हैं। पंच तत्त्वों से निर्मित शरीर के लिये अथाह जीवनदायी जल दिया हैं। प्राणवायु के लिये हवा का सर्वत्र संचार किया है।

विकासमान बने रहने के लिए सब जगह सूरज-चाँद की किरणें फैलायी हैं। धरती माता का सुन्दरसा क्रीडांगन बनाया हैं। चया-पचय, हृदय गति, रक्त संचरण, रसा-भिसरण. मल-मूत्र विसर्जन के लिये शरीर में स्वत: चालित तमाम क्रियाएं चला रखी हैं। ये क्रियाएं हमें खुद चलानी पडें तो जीवन ही दु:खद हो जाये। सुसुप्तावस्थ में भी नियमानुसार बहुत कुछ होता रहता हैं। जीवन की सभीक्रियाएं आत्मा के अटल कर्म सिध्दान्त के अनुसार अभिनीत होती रहती हैं। बुध्दिमान उसे ही कहा जायेगा जो परम सतगुरु के साथ सर्व सम्बन्ध जोडकर सदा कृतज्ञता ज्ञापिता करता रहे।

असीम ईश्वरीय उपलब्धियों के प्रति कृतज्ञ न होने से अहंकारवश हम छोटी-मोटी प्राप्तियों में ही उलझे रहते हैं। परिवर्तनशील प्रकृति व दयनीय आत्मायें तृप्ति न दे और ही हलचल में ला देते हैं। उहापोह में ही हमारी शरीरिक-मानसिक शक्तियाँ नष्ट होती रही हैं। आत्मा जितनी शान्त व तनाव रहित होती है उतनी ही मन की चंचलता कम होती है। बचपन व बुढ़ापे में खिंचाव कम होने का यही कारण हैं। नियमित आचार विचार, व्यवहार के अनुसार ही हमारे मन-बुध्दि का संचार होता हैं। यदि सदा निरोगी रहना चाहते हैं तो गंदे मार्ग के प्रति मन के बहाव को रोकिए। काम क्रोधादि से आन्दोलित मत होइए।

हम आत्मायें राजा हैं। मन-बुध्दि, संस्कार सहित सभी इन्द्रियां हमारी कर्मचारी हैं। मन को आत्मा व शरीर के बीच में सामंजस्य बिठाने वाला न बनाकर शारीरिक कामनाओं में ही उलझाये रखते हैं। इसीलिये जीवन का

ब्रह्माकुमार रामलखन
शान्तिवन, आबु रोड (राज.)

उद्देश्य काम विकार में डूबे रहना मान बैठे हैं। यौन ऊर्जा का केन्द्र मूलाधार चक्र हैं। यह ऊर्जा आज नीचे की ही तरफ बहती रहने से मनुष्य कामी नीच बन गया हैं। यही जीवन ऊर्जा जब भृकुटी रूपी कुटी में रहने वाली चैतन्य आत्मा की तरफ बहने लगे तो व्यक्ति आध्यात्मिक आलोक से आलोकित होते देवी-देवताओं की तरह आभमय होने लगता है।

उच्च मनोबल वालों के लिये कोई भी काम कठिन नहीं होता। कठिनाइयों को पार कर जीवन सफल करनेवालों को ही महापुरुष कहा जाता है। संयम-नियम के लिये यदि कोई दृढ प्रतिज्ञ हो जाये तो क्या मजाल कि विकार उसे बेकार मूल्यहीन बनावें। बलिष्ठ बुध्दि वाले व्यक्ति अधोगमित मन को भी गुलाम बना सकते हैं। आज तो स्वयं से शत्रुता कर, मन के वशीभूत हो जीवन ऊर्जा को व्यर्थ गंवाते रहते हैं। कहा भी गया हैं पराधीन सपने सुखनाही अब से ठान लीजिये कि सदा नियम, मर्यादाओं पर ही चलना है। दुर्गति की ओर बढ़ती दुनिया से शिक्षा लेकर जीवन को पवित्र व योगी बनाना है। अन्यथा रोमांटिक दुनिया हद के बंधनों में उलझाकर गिराती ही रहेगी। तृष्णायें तृप्त न कर चाहनाओं को सुलगाती हुई जीवन से धुआँ ही निकालती रहेंगी। फलस्वरूप आप तो धूमिल होंगे ही, संसार को भी गंदला करने के निमित्त बनते जायेंगे।

मन थकता नहीं जिससे उसकी प्यास नहीं बुझ पाती। समर्थ शरीर के मालिक हम तभी बन सकते हैं जब मन बलवान हो। आज तो बुढापे में भी मन विषय-विकारों के चक्कर में यहाँ-वहाँ भटकता रहता है। पाक आत्माओं का बुढापा भी निर्दोष बच्चों की तरह होता है। विकृत भावनाओं से ही मनोबल दुर्बल हो गया हैं। उसने ही जीवन को रोगों का पिटारा बना दिया हैं। शारीरिक दुर्बलताएं पौष्टिक भोजन व दवा-दारु से भाग जाती हैं पर मन की दुर्बलताएं राजयोग के शुभ चिन्तन से ही दुरुस्त हो सकती हैं। युवा अपने कल्पना लोक में किसी देहधारी को बिठा लिया करते हैं। व्यावहारिक जीवन में जहां उनकी कामनाएं कुण्ठित हो जाती हैं तो वे तडफ उठते हैं। पर अभी तक ऐसी कोई सर्जरी विकसित नहीं हुई जिससे कामुक विचारों को काटकर अलग किया जा सके तथा मन की कुण्ठाओं का आपरेशन कर अपेन्डिक्स की तरह फैंक दिया जाय। कप्सूल या इंजेक्शन देकर बुरे विचारों को रोक दिया जाय। शारीरिक बीमारियों की तरह मनोरोगों का पाइथोलोजिकल अथवा रेडियोलोजिकल टेस्ट भी नहीं किया जा सकता हैं।

उत्थान की ओर ले जाने वाली बुध्दि को मात्र ख्याली पुलाव पकाने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। तेल की धार की तरह बह रही जीवन ऊर्जा को उर्ध्वगमित कर लिया जाये तो मुट्ठीभर आत्मायें ही सारे संसार को बुध्दिबल से जगमग कर सकती हैं। ब्रहमचर्य का मतलब इन्द्रिय दमन नहीं बल्कि कमलवत जीवन है। ज्ञान योग की धारणा से ही हम उपकारी व दिव्य जीवन वाले बन सकते हैं। धर्म की धारणाओं पर चलने वाले गृहस्थ में देवत्व ला सकते हैं। उपराम वृत्ति वालों के लिए सम्पर्क-सम्बन्ध-कर्म व पदार्थ बंधन नहीं, सुख-शान्ति के साधन की तरह होते हैं। विश्व कल्याणी भाव से ही हम वसुधा को कुटुम्ब बना पायेंगे। ऐसे परोपकारी नर-नारी साथ-साथ रहते हुए भी प्रभु प्यार में मगन रहने लगें तो सारे संसार को सकाश-प्रकाश देने के निमित्त बना सकते हैं। बेहद की वृत्ति बनी होने से हद के निम्न आकर्षण उन्हें खींच नहीं पाते। हड्डी-मांस-मज्जा से भरे शरीर पर मोहित न होकर रूहानी दृष्टि-वृत्ति व स्मृति से नयी सृष्टि के निर्माण में सहयोगी बन सकते हैं। जीवन के अन्तिम क्षणों में खुशी-खुशी सबसे विदा लेते हुए अगले जन्मों को भी श्रेष्ठतर कर लेते हैं।

मोह-माया का कोई भी बन्धन आत्मा के उडान भरने में रुकावट नहीं बनना चाहिये।

विकलांग से दिव्यांग हो गए,पर बदला कुछ नहीं

विकलांगों को अब दिव्यांग कहा जाने लगा है, लेकिन इस सम्मानजनक संबोधन से उनकी समस्याओं में कोई कमी नहीं आयी है। अधिकतर सार्वजनिक जगहों पर उनके लिए जरूरी सुविधाओं का अभाव है। भारत में ढाई करोड़ से कुछ अधिक लोग विकलांगता से जूझ रहे हैं। इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद इनकी परेशानियों को समझने और उन्हें जरूरी सहयोग देने में सरकार और समाज दोनों नाकाम दिखाई देते हैं। देश में हुए एक सर्वे से सामने आया है कि अधिकांश सार्वजनिक स्थलों पर सुविधाओं के लिहाज से विकलांगों का जीवन किसी चुनौती से कम नहीं है। विकलांगता की समस्या से दो चार हो रहे लोगों के लिए जो न्यूनतम आवश्यक सुविधाएं सार्वजनिक जगहों पर होनी चाहिए, उसका अभाव लगभग सभी शहरों में है। अस्पताल, शिक्षा संस्थान, पुलिस स्टेशन जैसी जगहों पर भी उनके लिए टॉयलेट या व्हील चेयर नहीं हैं। गैर सरकारी संस्था स्वयं फाउंडेशन ने देश के आठ शहरों में किये अपने सर्वे में पाया कि सार्वजनिक जगहों पर जो सुविधाएं विकलांगों के लिए होनी चाहिए, वे नहीं हैं।

एक्सेसिबल इंडिया कैंपेन यानी सुगम्य भारत अभियान के तहत किए गये इस सर्वे में मुंबई के 51 सार्वजानिक स्थानों की पड़ताल की गयी। लगभग अस्सी फीसदी स्थानों पर रैम्प नहीं पाया गया। इस सर्वे में शामिल किसी भी बिल्डिंग में विकलांगों के लिए अलग से पार्किंग की व्यवस्था नहीं थी। जबकि अधिकतर बिल्डिंग में निर्धारित मानकों के अनुसार विकलांगों के लिए शौचालय तक नहीं पाया गया। मुंबई के आलावा चंडीगढ़, दिल्ली, फरीदाबाद, देहरादून, गुरुग्राम, जयपुर और वाराणसी में भी इस तरह के सर्वे किये गये। स्वयं फाउंडेशन के सानू नायर के अनुसार इन सभी शहरों में स्थिति लगभग एक जैसी ही है। एक्सेसिबल इंडिया कैंपेन के जरिये सरकार विकलांगों के लिए सक्षम और बाधारहित वातावरण तैयार करने पर जोर दे रही है। इस अभियान के तहत जुलाई 2018 तक राष्ट्रीय राजधानी और राज्य की राजधानियों की कम से कम 50 सरकारी इमारतों को दिव्यांगों के लिए पूरी तरह उपयोग लायक बनाया जाएगा। परिवहन प्रणाली में सुगम्यता और ज्ञान तथा आईसीटी पारिस्थितिकी तंत्र में विकलांगों की पहुंच को लक्ष्य बनाया गया है दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के अनुसार भवनों को पूरी तरह सुगम्य बनाने के लिए 31 शहरों के 1098 भवनों में से 1092 भवनों की जांच का कार्य पहले ही पूरा हो चुका है। विकलांगों के लिए विशेष व सुगम शौचालय का डिजाइन बना कर राज्यों को भेजा जा रहा है। इसके तहत पानी की उपलब्धता, दरवाजे, कमोड की उंचाई, पकड़ने के लिए दोनों तरफरॉडए स्वच्छ टोंटी तथा नलए लीवर हैंडल नल सहित वाश बेसिन व हवादार तथा प्रकाश जैसे मानक बनाये गये हैं। इसी के आधार पर पूरे देश भर में शौचालय बनाये जायेंगे। आधुनिक होने का दावा करने वाला समाज अब तक विकलांगों के प्रति अपनी बुनियादी सोच में कोई खास परिवर्तन नहीं ला पाया है। अधिकतर लोगों के मन में विकलांगों के प्रति तिरस्कार या दया भाव ही रहता हैए यह दोनों भाव विकलांगों के स्वाभिमान पर चोट करते हैं। शारीरिक रूप से असक्षम के लिए काम करने वाले किशोर गोहिल कहते हैं. दिव्यांग कह भर देने से इनके जीवन में कोई बदलाव नहीं आएगा। यह केवल छलावा है। उनका कहना है, हमें इंसान ही समझ लो वही काफी है। असक्षमता के चलते जो असुविधा है, उसके लिए इंतजाम होने चाहिए। केन्द्रीय मंत्री एम वेंकैया नायडू का कहना है कि दिव्यांग लोगों के प्रति अपनी सोच और मानसिकता को बदलने का समय आ गया है। विकलांगों को समाज की मुख्यधारा में तभी शामिल किया जा सकता है जब समाज इन्हें अपना हिस्सा समझे, इसके लिए एक व्यापक जागरूकता अभियान की जरूरत है। हाल के वर्षों में विकलांगों के प्रति सरकार की कोशिशों में तेजी आयी है। विकलांगों को कुछ न्यूनतम सुविधाएं देने के लिए प्रयास हो रहे हैं या कम से कम प्रयास होते हुए दिख रहे हैं। वैसे, योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर सरकार पर सवाल उठते रहे हैं। पिछले दिनों क्रियान्वयन की सुस्त चाल को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को फटकार लगायी है। सकारात्मक परिणाम के लिए दीर्घकालीन उपायों पर जोर देते हुए सानू नायर कहते हैं कि विकलांग व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार और व्यवसाय के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तभी वह बेहतर गुणवत्तापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। विकलांगों को शिक्षा से जोड़ना बहुत जरूरी है। इस वर्ग के लिए, खासतौर पर, मूक-बधिरों के लिए विशेष स्कूलों का अभाव है जिसकी वजह से अधिकांश विकलांग ठीक से पढ़-लिखकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं बन पाते। किशोर गोहिल का मानना है कि विकलांगों को अवसर प्रदान करना या उन पर निवेश करना घाटे का सौदा नहीं है बल्कि इससे देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी।

विकलांग मंच कार्यालय: प्लाट नं. 141, सेक्टर-8, मालवीय नगर, जयपुर-302017, फोन:0141-2547156. फोटो टाइपसेटिंग: टास्क ग्राफिक्स (मोबा.:9828278728)। मुद्रित: श्रीराम आफसेट, जोरावरसिंह गेट बाहर, आमेर रोड, जयपुर। संरक्षक: डी.आर.मेहता (रिटा.आईएएस)। प्रधान संपादक: एम.आर.सिंघवी (रिटा.आईआईएस)। प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक: एन.के.खत्री। संपादकीय सलाहकार:डॉ. अरुण माथुर। हाडोती अंचल ब्यूरो प्रमुख: अर्जुन देव चद्दा, कोटा। प्रबन्धक:धर्मपाल। E-Mail:vicklangmanch@ymail.com / vicklangmanch@gmail.com

सेरेब्रल पाल्सी शिविर में 211 की जांच

जयपुर (कासं)। निशक्तजन कल्याण परिषद एवं राजस्थान जैन सभा के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय नारायणसिंह सर्किल स्थित दिगम्बर जैन भट्टारक नसिया में 30 अप्रैल को सेरेब्रल पाल्सी शिविर आयोजित किया गया।

निशक्तजन कल्याण परिषद के सहसंयोजक राजेश कुमार वर्मा ने बताया कि इस सेरेब्रल पाल्सी (जन्मजात मानसिक विकलांगता) निदान व परामर्श शिविर में त्रिशला फाउंडेशन इलाहाबाद से डॉ. जे.के.जैन व उनकी टीम ने 211 सेरेब्रल पाल्सी पीड़ित बच्चों की जांच कर उपचार व परामर्श दिया।

शिविर के मुख्य अतिथि राजस्थान के पूर्व निःशक्त जन आयुक्त खिल्लीमल जैन रहे व अध्यक्षता समाजसेवी श्रीमती अलका गोधा ने की। विशिष्ट अतिथियों में अशोक जैन नेताजी, राजेन्द्र गोधा, डॉ.सुषमा सिंघवी व कोटा के रिछपाल पारीक रहे। शिविर में त्रिशला फाउंडेशन इलाहाबाद के डॉ. जे.के.जैन ने कहा कि अब यह रोग लाइलाज नहीं है। इस रोग को नियमित दवा व एक्सरसाइज से ठीक किया जा सकता है। अंत में कार्यक्रम संयोजक आर के जैन व राजस्थान जैन सभा के मंत्री प्रदीप जैन ने आभार व्यक्त किया।

मोबाइल ब्लड कलेक्शन बस का लोकार्पण

जयपुर (कासं)। समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता लाने और रक्तदाता के पास स्वयं पहुँचने के लिये गोपालकृष्ण सेवा समिति द्वारा प्रसिद्ध समाजसेवी और उद्योगपति जयसिंह सेठिया के सहयोग से निर्मित मोबाइल ब्लड कलेक्शन बस का लोकार्पण किया गया। स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के चीफ जनरल मैनेजर विजय रंजन और राजस्थान पुलिस में आई.जी. अमृत कलश ने फीता काटकर मोबाइल ब्लड कलेक्शन बस को आमजन को समर्पित किया। सीतापुरा स्थित सेठिया ट्रस्ट परिसर में हुये समारोह में एस.बी.आई. के चीफ जनरल मैनेजर विजय रंजन ने स्वयं रक्तदान करके नयी मिसाल कायम की। इस अवसर पर रंजन ने कहा कि बस का असली लोकार्पण तो रक्तदान करके ही बेहतर रहेगा क्योंकि एक व्यक्ति के ब्लड देने से तीन जिन्दगियों को बचाया जा सकता है यही सोचकर वह अपने आपको रक्तदान करने से रोक नहीं पाये। रंजन ने कहा कि जयसिंह सेठिया जैसे समाजसेवी हमारे समाज के लिये मिसाल है और इन्होंने इस मोबाइल बस को भेंट करके समाज के लिये एक बड़ा कार्य किया है। रंजन ने कहा कि एस.बी.आई. भी सोशल गतिविधियों में हरदम आगे रहा है और अब हम स्वयं समाजसेवी संस्थाओं को अपने से जोड़ रहे है और सेठिया जी ने जब इस तरह की बस के लोकार्पण का आग्रह किया तो अपने आपको रोक नहीं पाये क्योंकि रक्तदान आज हमारे समाज की अहम जरूरत है। इससे रक्त का प्रवाह शरीर में बना रहता है साथ ही पाजिटीविटी भी आती है।

मोबाइल ब्लड कलेक्शन बस के लोकार्पण में विशिष्ट अतिथि राजस्थान पुलिस में आई.जी. अमृत कलश ने कहा कि रक्तदान महादान है और आज आमजन को इससे जोड़ने की जरूरत है क्योंकि आज काफी मरीज रक्त के जरूरत वाले अस्पतालों में भर्ती है और जयसिंह सेठिया ने आज इस मोबाइल बस को भेंट करके हजारों मरीजों को राहत प्रदान की है क्योंकि मोबाइल बस से अब रक्तदान के लिये काफी लोग आगे आयेंगे। कलश ने बताया कि सेठिया जी जिस तरह समाज सेवा का धर्म निभा रहे है वह काबिले तारीफ है। लोकार्पण समारोह में जयसिंह सेठिया ने कहा कि यह बस ग्रामीण क्षेत्रों में भी जाकर ग्रामीणों को रक्तदान के लिये जागरूक करेगी क्योंकि इसकी जरूरत ज्यादा है और यही सोच कर उन्होंने यह बस समिति को भेंट की है।

समारोह में स्टेट बैंक ऑफइण्डिया की ए.जी.एम. मंजू शर्मा, ब्रांच मैनेजर मोना गुप्ता, गोपाल कृष्ण सेवा समिति के ईश्वर मेहरचंदानी और टीकमदास पारवानी के साथ काफी गणमान्य लोग उपस्थित थे।

दिव्यांग ने कायम की मिसाल, कबाड़ से बनाए ट्रैक्टर और जीप

सिरसा (विमं डेस्क)। भारत में दिव्यांग होना किसी चैलेंज से कम नहीं है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो लोगों की इस सोच के आगे हार नहीं मानते और एक नया मुकाम हासिल करके दिखाते हैं। हरियाणा के सिरसा जिले के मोहनदास ने देश भर के दिव्यांगों के सामने एक ऐसी ही मिसाल पेश की है। हरियाणा के रोड़ी गांव के रहने वाले मोहन दास की एक दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी प्रेक्चर हो गई थी जिसके कारण वो चलने-फिरने में असमर्थ हो गए और चारपाई पर बैठने को मजबूर हो गए। लेकिन मोहनदास ने हार नहीं मानी और उन्होंने चलने-फिरने के लिए कबाड़ से ही थ्री व्हीलर बना दिया। यहीं नहीं उन्होंने एक चार फीट का ट्रैक्टर और जीप भी बना दी। इसका कंट्रोल अपने हाथ में रखा। घर में किसी पर बोझ ना बनें इसके लिए इलेक्ट्रॉनिक व्हील चेयर और एक स्पेशल स्टैंडिंग स्कूटर पर रोजमर्रा के सारे काम खुद कर लेते हैं। मोहनदास बचपन से ही कुछ अलग करने का शौकीन था जिसके कारण वो घर में कुछ ना कुछ करता रहता था। परिवार वाले उसे काम करने से मना करते थे लेकिन उसके अंदर कुछ करने का जुनून था और आज ये जुनून उसके काम आया।

जगदीश लोहार को मिला राज्य का पहला दिव्यांग वाहन विशेष फास्टेग कार्ड

जोधपुर (निप्र)। राज्य का पहला दिव्यांग वाहन विशेष फास्टेग कार्ड जोधपुर के जगदीश लोहार की कार को जारी किया गया है। दिव्यांग चौपहिया वाहनों (इनवेलिड केरिज) को सरकार द्वारा टोल यूजर फीस से मुक्ति प्रदान कर रखी है। ऐसे में दिव्यांग वाहन चालकों को टोल प्लाजा पर हर बार कागजात आदि की जांच करानी पड़ती है जिससे उनका काफी समय जाया हो जाता है व अन्य वाहनों की कतारें लग जाती है। इससे निजात दिलाने के लिए भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने हाल ही नया प्रावधान किया था। इस नये प्रावधान को लागू कराने के लिए जोधपुर के जगदीश लोहार व श्रवण उपाध्याय कई दिनों से प्रयासरत थे। इस पर राज्य सरकार ने राज्य का पहला शून्य मूल्य विशेष फास्टेग कार्ड जोधपुर के जगदीश लोहार की कार को जारी किया है। इस विशेष फास्टेग कार्ड को कभी रिचार्ज कराने व पंजीयन फीस तक देने की आवश्यकता नहीं है।

सांकेतिक भाषा में दिए दक्षता प्रमाणपत्र

जयपुर (कासं)। राजकीय सेठ आनंदीलाल पोदार मूक बधिर उ.मा. विद्यालय, जयपुर के 12 शिक्षकों को नोएड़ा डेफ सोसाइटी द्वारा भारतीय सांकेतिक भाषा में दक्षता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। विद्यालय प्रभारी डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका ने बताया कि विद्यालय के 20 शिक्षकों को सांकेतिक भाषा का 8 माह का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें 12 शिक्षक सफल रहे। इन सफल शिक्षकों में श्रीमती अंजूरानी, कविता चौधरी, डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका, सुष्मिता गिल, आराधना सक्सेना, रेणु शर्मा, रजनी राजोरिया, ओमप्रकाश कुडी, सुशीला चौधरी, नीलम शर्मा, अरूणा अरोड़ा और निर्मल गुप्ता रहे। इन सभी को नोएड़ा डेफ सोसाइटी की काआर्डिनेटर श्रीमती पूनम कुमारी ने दक्षता प्रमाणपत्र प्रदान किए।

योगी आदित्यनाथ से मिले प्रशांत अग्रवाल

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के अन्तराष्ट्रीय अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल और संस्थान की निदेशिका वंदना अग्रवाल ने उत्तर प्रदेश के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की और संस्थान की गतिविधियों के बारे में अवगत कराया।

अग्रवाल ने सीएम योगी आदित्यनाथ से उनके लखनऊ स्थित मुख्यमंत्री आवास पर मुलाकात की और नारायण सेवा संस्थान के क्रियाकलापों और पीड़ित मानवता एवं अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध व वंचित जनों की सेवा में सतत् सेवारत निशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। संस्थान में होने वाले समस्त सामाजिक कार्य, पीड़ितों की सेवा के लिए उठाए गए कदम से सीएम योगी को अवगत कराया। इस बीच उन्होंने नारायण सेवा संस्थान के अवलोकन के लिए आमंत्रण प्रस्तुत किया जिसे योगी आदित्यनाथ ने सहर्ष स्वीकार किया, और जल्द ही संस्थान का दौरा करने की बात कही।

प्रशिक्षणार्थियों को दी सिलाई मशीनें

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से दिव्यांग एवं निर्धनजन के लिए चलाये जा रहे स्वरोजगारन्मुखी नि:शुल्क प्रशिक्षणों के क्रम में तीन माह के सिलाई प्रशिक्षण बैच का प्रशिक्षण पूर्ण हुआ। निदेशक वंदना अग्रवाल ने बैच में शामिल सभी 19 प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं सिलाई मशीन प्रदान की। प्रशिक्षिका नसरीन बानू ने प्रशिक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

शिक्षक को लगाया कृत्रिम हाथ

उदयपुर। खेरवाड़ा निवासी विश्वबन्धु पेशे से एक शिक्षक हैं। करीब डेढ़ साल पहले हुई एक रोड दुर्घटना में उन्होंने अपना एक हाथ खो दिया था। जिसके बाद से इनके सभी दैनंदिन कार्य रूक गए थे। क्लास रुम में अध्यापन के दौरान भी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने गुजरात के एक हॉस्पीटल में भी उपचार भी करवाया लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ। इस बीच उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से संपर्क किया, जहां से उन्हें कृत्रिम हाथ निशुल्क मिला। संस्थान ने सफल शल्य चिकित्सा कर मोड्यूलर हाथ लगाया। अब वह वजन उठाने, कम्प्यूटर व गाडी चलाने जैसे कार्य भी आसानी से कर लेते हैं।

अरे वाह : दिव्यांग मांगने आया था शौचालय, मिल गयी नौकरी

औरैया। प्रदेश में योगी सरकार बनने के बाद अधिकारियों की कार्यशैली में खासा परिवर्तन आया है। ऐसा ही कुछ जिलाधिकारी कार्यालय में हुआ। एक दिव्यांग शौचालय मांगने कार्यालय पहुंचा। प्रभारी जिलाधिकारी ने उसकी लिखावट देखकर उसकी शिक्षा पूछी और उसे नौकरी करने का ऑफर दे दिया। जिलाधिकारी की जगह अपर जिलाधिकारी फरियादियों की समस्याएं सुन रहे थे। इसी बीच बिधूना तहसील क्षेत्र के गांव बराहार का रहने वाले दिव्यांग बृजेंद्र प्रताप सिंह डीएम कार्यालय पहुंचे। हाथों का सहारा लेकर उन्हीं हाथों में प्रार्थना पत्र दबाए वह प्रभारी डीएम रामसेवक द्विवेदी के सामने पहुंचे। उन्होंने कुर्सी पर बैठने को कहा। इसके बाद बृजेंद्र ने बताया कि गांव में शौचालय कागजों पर बनाए जा रहे हैं। इसके बाद उसने प्रार्थना पत्र उन्हें दे दिया। प्रार्थना पत्र पढ़ते-पढ़ते अचानक एडीएम बोले की लिखावट तो अच्छी है, कितना पढ़े हैं। दिव्यांग ने जवाब दिया हाईस्कूल तक। उन्होंने कहा कि नौकरी करोगे, यहीं लिखा पढ़ी करते रहना। गांव कितनी दूर है। उसने बताया कि 30 किलोमीटर दूर है। बृजेंद्र बोले कि कोई बात नहीं साहब, आप पहले शौचालय बनवा दो फिर में सोचकर और घर वालों से पूछकर नौकरी के लिए बताऊंगा। इस पर अपर जिलाधिकारी ने डीपीआरओ के लिए प्रार्थना पत्र लिखा और फोन कर उनकी समस्या का निस्तारण करने का आश्वासन दिया। बृजेंद्र जाने लगे तो एडीएम बोले कि अब चिट्ठी लिखने की कोई जरूरत नहीं है। शौचालय न बने तो सीधे मेरे कार्यालय आना।

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन 9 जुलाई को

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निदेशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी नई दिल्ली में 9 जुलाई 2017 को प्रात: 10 बजे होना निश्चित हुआ है। यह जानकारी सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्डा व दिल्ली के संयोजक एस.पी. सिंह ने दी। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 300 रूपये, का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता संख्या 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे।

बीस साल भोगी पीड़ा, अब खुश हूं

उदयपुर (निप्र)। जन्म के 6 माह बाद ही पोलियो की शिकार हुई स्वाती (22) नारायण सेवा संस्थान मे पिछले वर्ष पोलियो केरेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खडी होती और चलती है। गोरखपुर (उप्र) में बीटीएस की छात्रा स्वाती सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई हैं। उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूं तो रो पड़ती हूं। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉस्पीटल में लम्बे इलाज भी चले लेकिन फायदा नहीं हुआ। घिसटकर चलना ही उसकी नियती था। नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो वर्ष नवम्बर में यहां आई और डॉ ए.एस. चुण्डावत ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से खड़ी भी होती है ओर बिना सहारे चलती भी हैं। पांव का टेढ़ापन भी काफी हद तक ठीक हो गया है।

क्षमा कौशिक का अमेरिकन फैलोशिप हेतु चयन

अजमेर (निप्र)। राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था की सचिव एवं मुख्य कार्यकारी श्रीमति क्षमा राकेश कौशिक का अमेरिकन्स डिसऐबिलिटी एक्ट एनीवरसरी इनक्लूसिव एजुकेशन फैलोशिप प्रोग्राम के लिए चयन हुआ है। फैलोशिप के तहत श्रीमति कौशिक पाँच सप्ताह यूर्निवसिटी ऑफ मिनीसोटा तथा एक सप्ताह वाशिंगटन डी.सी में रहकर विकलांगता एवं समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन करेगी और वहाँ के विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं के कार्यो के बारे में जानकारी प्राप्त करेगी। इस फैलोशिप हेतु कुल 300 व्यक्तियों ने आवेदन किया था जिसमें 7 व्यक्तियों का चयन भारत से किया गया है। संस्था अजमेर जिले में 1988 से मानसिक विकलांगता, सेरेब्रल पाल्सी, आटिज्म, बहुविकलांगता क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रही है। श्रीमति कौशिक गत 16 वर्षो से मानसिक विकलांगता एवं समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। संस्था द्वारा रिवर्स इनक्लूजन मॉडल पर अजमेर एवं ब्यावर में कार्य किया जा रहा है जो पूरे देश में अपने तरह के बहुत कम मॉडल है। संस्था एवं श्रीमति क्षमा कौशिक को इस क्षेत्र में राष्ट्रीय, राज्य स्तर एवं जिला स्तर पर सम्मानित भी किया जा चुका है।

लेखराम को मिला नया हाथ

उदयपुर (निप्र)। तकरीबन 6 साल पहले एक गन्ने की मशीन में हाथ चले जाने से हुई घटना में अपना एक हाथ खो देने वाले लेखराम का बुधवार को नारायण सेवा संस्थान में मोड्युलर लिम्ब लगाया गया। 24 वर्षीय लेखराम ने बताया कि वे हरियाणा के सिरसा क्षेत्र के रहने वाले हैं और 6 साल पहले गन्ने की मशीन में हाथ चले जाने से उन्होंने अपना एक हाथ खो दिया था। तमाम प्रयासों और कई सरकारी हॉस्पीटल के ईलाज के बाद भी परिणाम शून्य ही नजर आया। तब लेखराम ने नारायण सेवा संस्थान की मदद ली और उसका सफल शल्य चिकित्सा कर कृत्रिम हाथ लगाया गया।

डीएम ने दिव्यांग से मिलकर हर संभव सहायता दिलाने का आश्वासन दिया

अल्मोड़ा। जिलाधिकारी सविन बंसल ने विकासखण्ड हवालबाग के डोबा गॉव जाकर एक परिवार के 03 दिव्यांग बच्चों से मिलकर उन्हें यथा सम्भव सहायता दिलाने का आश्वासन दिया। उन्होंने गॉव के कैलाश चन्द्र तिवारी के 03 बच्चे यथा पुत्र नीरज उम्र 17 वर्ष, सौरम्भ 29 एवं पुत्री कंचन 23 वर्ष जो 10 वर्ष की उम्र में पहुँचने पर दिव्यांग हो गये थे और कमर से नीचे उन्हें लकवा पड़ गया था। जिलाधिकारी ने मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए एवं उनकी जायज समस्या को ध्यान में रखकर निरीक्षण के दौरान उपस्थित जिला विकास अधिकारी को निर्देश दिये कि घर के पास ही शौचालय का निर्माण करने एवं मनरेगा के माध्यम से उनके घर तक जाने वाले रास्ते को समतलीयकरण करने के भी निर्देश दिये ताकि उनकी व्हील चेयर आसानी से घर तक पहुँच सके। जिलाधिकारी ने शिक्षाधिकारी को निर्देश दिये कि कैलाश चन्द्र की पुत्री कंचन और सौरभ का प्रवेश 11वीं में मुक्त विश्वविद्यालय में कराये जाने की बात कही और उनकी फीस स्वयं मेरे द्वारा वहन की जायेगी। उन्होंने सौरभ जो 11वी में पढ़ रहा है उसे देव सस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार में प्रवेश दिलाये जाने की बात कही। इस दौरान जिलाधिकारी ने विकंलाग बच्चों के मेडिकल सार्टिफिकेट सहित अन्य अभिलेख भी देखे और कहा कि प्रारम्भिक शिक्षा के बाद तीनो बच्चों के लिए स्वयंसेवी संस्था दिल्ली एवं उदयपुर से वार्ता की जा रही है। इसके बाद उन्हें व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी इन स्थानों में भेजा जायेगा। जिलाधिकारी ने आपदा प्रबन्धन अधिकारी को गॉव में 02-03 स्ट्रेचर रखने के निर्देश दिये ताकि विकंलागों को आने जाने के लिए दिक्कत न हो। उन्होंने कहा कि शासन-प्रशासन द्वारा हर सम्भव सहायता दिलाये जाने का प्रयास किया जायेगा। इस दौरान अपर मुख्य चिकित्साधिकारी योगेश पुरोहित, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक एच.बी. चन्द्र, जिला आपदा प्रबन्धन अधिकारी राकेश जोशी, डा. अजीत त्रिपाठी, अधीक्षण अभियन्ता लोक निर्माण विभाग एस.डी. पाण्डे आदि उपस्थित थे।

दिव्यांग प्रकोष्ठ की प्रदेश मंत्री बनी परवीन बानो

जयपुर (वि)। नरेंद्र मोदी विचार मंच दिव्यांग प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक उत्तम चन्द जैन ने परवीन बानो को दिव्यांग प्रकोष्ठ की प्रदेश मंत्री नियुक्त किया है। परवीन बानो पिछले काफी समय से दिव्यांग लोगों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है और उनको जागरूक करने का प्रयास कर रही है।

पेंशन और खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने की मांग

अन्ता (निप्र)। राष्ट्रीय विकलांग पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष आफाक अहमद खान ने अन्ता के उपखंड अधिकारी को एक ज्ञापन देकर दिव्यांगों को समय पर पेंशन और खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने की मांग की है। आफाक अहमद खान ने ज्ञापन में बताया कि क्षेत्र के दिव्यांगों सहित विधवा व वृद्धजनों को समय पर पेंशन और खाद्य सामग्री नहीं मिल पा रही है जिससे उन्हें जीवन यापन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

डॉ.गोविन्दी पंवार राजस्थान प्रांत की प्रभारी मनोनीत

जोधपुर (निप्र)। अजा, जजा व पिछड़े वर्ग की राष्ट्रीय संस्था मौलिक अधिकार संघर्ष समिति (मास) गोंडा, उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय महासचिव ए.के.नन्द ने डॉ.गोविन्दी पंवार को पुन: राजस्थान प्रांत का प्रभारी मनोनीत किया है।

सौ दिव्यांग रोजगार कार्यालय में पंजीकृत

एजल। एजल, लुंगलेई और सैहा में 2015-16 के दौरान विशेष रोजगार कार्यालय में सौ दिव्यांगों को पंजीकृत किया गया है। यह जानकारी राज्य के समाज कल्याण मंत्री पी.सी. ललथनलियाना ने आज दी।

विपक्षी मिजो नेशनल फ्रंट (एमएनएफ) के ललरिनवामा के एक लिखित सवाल के जवाब में ललथनलियाना ने कहा कि एजलए लुंगलेई और सैहा में विशेष रोजगार कार्यालय में क्रमश: 69, 21 और 15 लोगों को पंजीकृत किया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार 25 दिव्यांग लोगों को बेरोजगारी भत्ता दे रही है। एक अन्य सवाल के जवाब में ललथनलियाना ने कहा कि एजल के नजदीक डर्टलांग में समारिटन सोसायटी द्वारा संचालित विशेष नेत्रहीन विद्यालय में 29 छात्र हैं लेकिन वहां दस शिक्षकों और एक गैर शैक्षणिक कर्मचारी का वेतन सामाजिक कल्याण विभाग दे रहा है।

ईजाद की कार चलाने की अनोखी प्रणाली

कोच्चि (विमं डेस्क)। व्हीलचेयर पर चलने को मजबूर बीजू वर्गीज ने अपनी इस शारीरिक चुनौती को मजबूती का रूप देते हुए अपने लिए और अपनी तरह के दूसरे लोगों की मदद के लिए कार चलाने की एक अनोखी प्रणाली का निर्माण किया। केरल सरकार द्वारा आयोजित किए जा रहे व्यापार 2017 सम्मेलन में स्टॉल लगाने वाले करीब 200 प्रदर्शकों में शामिल 44 साल के पुरस्कार विजेता उद्यमी ने अपनी प्रणाली प्रदर्शनी के लिए लगा रखी है। केरल सरकार ने अपने लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र की झलक दिखाने के लिए इस सम्मेलन का आयोजन किया है। बीजू द्वारा विकसित प्रणाली व्हीलचेयर का इस्तेमाल करने वाले लोगों को हस्तचालित ब्रेक, क्लच एवं एक्सलेटर लीवर का प्रयोग कर कार चलाने की सुविधा देता है। इन्हें किसी भी कार के गियर में लगाया जा सकता है। आयोजकों ने बताया कि 2003 में विकसित की गई और ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा अनुमोदित प्रणाली को कार में बिना कोई बदलाव किए 15 मिनटों में लगाया जा सकता है और इतनी ही आसानी से हटाया जा सकता है। इस तरह की एक इकाई की कीमत 15000 से 30000 के बीच रखी गई है और यह कीमत व्यक्ति की शारीरिक अशक्तता पर निर्भर करेगी। वैसे लोग जो यह खर्च वहन नहीं कर सकते, बीजू उनके लिए यह प्रणाली नि:शुल्क लगा देते हैं। बीजू ने कोट्टायम जिले के मुक्कूट्टुतरा में अपने घर के पास एक कार्यशाला में इस प्रणाली का विकास किया। उनके साथ उनके 2 कर्मचारी काम करते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व महसूस होता है कि मैंने 2000 से अधिक अशक्त लोगों और साथ ही उनके परिवारों को एक नया जीवन दिया। बीजू 25 साल की उम्र में एक सड़क हादसे का शिकार हुए थे जिसमें उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट लग गई।

गौवंश एवं जीव रक्षा संयुक्त महाभियान

जयपुर (कासं)। भट्टारक जी की नसियां जैन मंदिर जयपुर में राष्ट्रीय गौरक्षा संघ के तत्वाधान में गौवंश एवं जीव रक्षा संयुक्त महाभियान कार्यक्रम का आयोजन रखा गया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जैन मुनि मणि रत्न सागर जी महाराज थे एवं अध्यक्षता स्वामी जनार्दन देव राष्ट्रीय अध्यक्ष ने की उन्होंने कहा कि हम मीडिया चैनलों के माध्यम से भी देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से माँग करते हैं कि हमें रासायनिक खाद युक्त कृत्रिम दूध मुक्त एवं कृत्रिम गर्भाधान मुक्त भारत चाहिए।

गाय बचेगी तो देश बचेगा अहिंसा की भारतीय संस्कृति बचाओ, प्राणी बचाओ, सृष्टि बचाओ। कार्यक्रम में उपस्थित ध्रुव कुमार राष्ट्रीय महामंत्री, खिल्ली मल जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गोपी चंद गूर्जर प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान ने अपने अपने विचार व्यक्त किए।

खिल्ली मल जैन ने बताया कि जीव हिंसा व बूचड़ खानों के कारण 18 प्रतिशत ग्लोबल वार्मिंग व बिगड़ते हुए पर्यावरण के कारण आने वाली भयंकर बीमारियों के प्रकोप के साथ पशुधन व वनस्पति के लिए जीव रक्षा व गौ वंश के साथ पशुधन व वनस्पति की सुरक्षा के लिए देश व्यापी प्रखर गौ रक्षा आंदोलन के प्रथम चरण में दि. 9 मई 2017 से 23 मई 2017 तक पूरे देश में आमजन की भागीदारी भी सुनिश्चित हो। जिससे राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा संसद में कठोर कानून बनाया जा सके।

हम माँग करते हैं कि गौ वंश, भैंस वंश हत्या मुक्त एवं मांस निर्यात मुक्त भारत बनाया जा सके। कार्यक्रम में राजेश वर्मा, सुरेश शर्मा, डा.आर एस चौहान एवं काफी संख्या में गो भक्त उपस्थित थे।

200 दिव्यांग बच्चों की जिंदगी संवार रही हैं सरिता

विमं डेस्क

दुनिया बदल रही है। बदलाव की इस बयार ने लोगों के नजरिए को भी बदल दिया है। कल तक जिन्हें मजबूर और असमर्थ का तमगा देकर हाशिए पर रखा जाता था, आज वो कामयाबी की नई इबारत लिख रहे है। अपने हुनर और हौसले की बदौलत उन्होंने ये बता दिया है कि वे मजबूर नहीं बल्कि मजबूत हैं। हम बात कर रहे है शारीरिक रुप से अक्षम दिव्यांगों की। काशी से पीएम नरेंद्र मोदी ने शारीरिक रूप से असमर्थ लोगों को नया नाम दिया और उनके प्रति सरकार की सहानुभूति दिखाई तो इसका असर भी अब दिखने लगा है। समाज में कई ऐसे लोग हैं जो दिव्यांगों को मुख्यधारा में लाने की कोशिश में लगे हैं। ऐसी ही हैं गाजीपुर जिले की रहने वाली सविता सिंह। राजस्व विभाग में लेखाधिकारी के पद पर काम करने वाली सविता सिंह आज दो सौ दिव्यांग बच्चों के लिए मां की तरह हैं। सविता सिंह ने इन बच्चों को जन्म तो नहीं दिया। लेकिन जन्म देने वाली से कहीं बढ़कर हैं। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी इन दिव्यांग बच्चों के लिए समर्पित करने का फैसला कर लिया है। ये बच्चे ही अब सविता की जिंदगी हैं। सविता जीती हैं तो बस इन बच्चों के लिए। दो पैसे कमाती हैं तो इन बच्चों के लिए बच्चों की ये दुनिया ही अब इन्हें रास आती है।

सविता ने कैसे संवारी दिव्यांगों की दुनिया

दिव्यांग बच्चों को हौसला देने और उन्हें मजबूत बनाने के लिए सविता आज जी जान से जुटी हैं। गाजीपुर के शास्त्री नगर इलाके में इन बच्चों के लिए सविता एक स्कूल चला रही है, ताकि बच्चे पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ा हो सके। सविता के स्कूल में इस वक्त दो सौ के ऊपर बच्चे हैं, जो हर रोज पढ़ाई के लिए उनके स्कूल में आते हैं। बच्चों की पढ़ाई के साथ साथ सविता उन्हें रोजगार देने वाले कोर्स की ट्रेनिंग भी दिलाती हैं। ताकि पढ़ाई के बाद ये बच्चे खुद का रोजगार कर सकें। सविता के स्कूल में कंप्यूटर के साथ सिलाई कढ़ाई की ट्रेनिंग दी जाती है। सविता जानती हैं कि अगर इन बच्चों को मानसिक रुप से मजबूत बनाना है तो इन्हें शिक्षित करना बेहद जरुरी है। लिहाजा एक स्कूल की जरुरत थी, जहां ये बच्चे पढ़ाई कर सकें। लेकिन दुर्भाग्यवश पूर्वांचल के पिछड़े जिलों में शुमार गाजीपुर में दिव्यांगों के लिए कोई भी स्कूल नहीं था। दिव्यांग बच्चों की इसी जरुरत को सविता ने समझा और एक स्कूल खोलने का निर्णय किया। हालांकि ये

इतना आसान नहीं था पर सविता ने भी हार नहीं मानी। दिव्यांग बच्चों के लिए सविता मुहल्ले मुहल्ले चक्कर लगाती रहीं। लोगों से चंदा मांगा, कुछ ने आगे बढ़कर उनका साथ दिया तो कुछ ने दिव्यांगों का नाम सुनते ही मुंह फेर लिया। दिव्यांगों का स्कूल खोलने के लिए सविता ने अपनी जिंदगी भर की गाढ़ी कमाई लगा दी। सालों की मेहनत के बाद आज शास्त्रीनगर मोहल्ले में बच्चों का स्कूल बन पाया। इस स्कूल में बच्चों के रहने के हॉस्टल की भी व्यवस्था है। आज सविता इन बच्चों के साथ बेहद खुश हैं।

दिव्यांग बच्चों के साथ क्यों जुड़ी सविता

दिव्यांगों के साथ सविता के जुड़ने की कहानी भी बेहद दिलचस्प है। दरअसल सविता खुद भी दिव्यांग हैं। सविता का एक पैर बचपन से ही खराब है। लिहाजा सविता आम बच्चों की तरह न दौड़ पाती थी और न ही डांस कर पाती थी। लेकिन इन सबके बीच एक ऐसा वाकया हुआ जिसने सविता के जीने का नजरिया ही बदल दिया। सविता ने बताया, जब मैं स्कूल जाती थी तो उनके साथी उन्हें चिढ़ाते थे। ताने मारते थे। सामान्य बच्चों के साथ पढ़ाई करने में मुझे खासी दिक्कत होती थी। मैंने यह काम इसलिए शुरू किया ताकि फिर किसी बच्चों को मेरी जैसी जलालत ना झेलनी पड़े।

अपनी इस नई दुनिया से आज सविता बेहद खुश हैं। सरकारी मुलाजिम होने के बावजूद सविता दिव्यांगों के लिए समय निकाल लेती है। अपनी सैलरी का एक बड़ा हिस्सा सविता इन बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर खर्च करती हैं। ताकि ये बच्चें हुनरमंद बने। उन्हें दूसरे के सहारे की जरुरत ना पड़े। मूलरुप से दिलदारनगर इलाके की रहने वाली सविता छह भाई बहनों में सबसे छोटी हैं। सविता जब 6 महीने की थी तभी वो पोलियो की शिकार हो गईं। पोलियो की वजह से उनका एक पैर खराब हो गया। एक तो दिव्यांग ऊपर से लड़की होना। ये सबकुछ इतना आसान नहीं था। सविता बताती हैं कि आसपास के लोग और रिश्तेदार बस यही कहते थे इस लड़की का क्या होगा। कौन इससे शादी करेगा। दुनिया वालों के ताने सविता के जेहन में तीर की तरह चुभते थे। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। शुरूआती पढ़ाई लिखाई के बाद गाजीपुर पीजी कॉलेज से स्नातक की डिग्री ली और प्रतियोगी परीक्षाओं में लग लगी। नतीजा आज वो एक सम्मानजनक पद पर आसीन हैं। सविता चाहती हैं कि उनके स्कूल में आने वाले बच्चे सिर्फ पढ़ाई लिखाई ही ना करें बल्कि स्वावलंबी भी बने। इसलिए सविता का पूरा फोकस इन बच्चों की स्किल ट्रेनिंग पर होता है। सविता के स्कूल में कंप्यूटर, चादर की छपाई, फूलों की अगरबत्ती, फ्लावर पॉटस, पेंटिंग की ट्रेनिंग दी जा रही है।

खुद के खर्चे से उठाती है बच्चों का खर्च

सविता ने साल 2004-05 में दिव्यांग बच्चों के लिए समर्पण नाम की जो संस्था खड़ी की थी आज वो बरगद का रुप ले चुकी है। लेकिन सविता को मलाल है कि सरकार इस नेक काम में उनकी उतनी मदद नहीं कर रही है जितना होना चाहिए। सविता बताती है, लगभग 10 सालों के कड़े संघर्ष के बाद सरकार इन बच्चों के लिए अनुदान देने को तैयार हुई लेकिन वो भी ऊंट के मुंह में जीरा के समान है। सविता सवाल करते हुए कहती हैं कि क्या ये संभव है कि महंगाई के इस दौर में एक बच्चे के एक वक्त की डाइट फीस 6 रुपए हो। सविता के स्कूल से पढ़कर निकलने वाले बच्चे भी अब अपनी दुनिया में खुश हैं। कई ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने खुद का कारोबार शुरू कर दिया है। इन बच्चों को सविता की संस्था की ओर से बैंकों से लोन दिलाया गया। यही नहीं सविता हर मोड़ पर इन बच्चों के साथ खड़ी नजर आती हैं। इन दुख सुख में सविता साथ रहती हैं। सविता के स्कूल में पढ़ने वाला आकाश बताता है,

जब से मैं मैडम के स्कूल में आया हूं कभी अकेला महसूस नहीं करता। जीने को लेकर जो उम्मीद मैंने छोड़ दी थी। एक बार फिर से वो मेरे अंदर जाग गई है।

दिव्यांग बच्चों के लिए कुछ करने की जिद ही है कि सविता ने शादी नहीं करने का फैसला किया। सविता के नेक काम के लिए उन्हें कई सम्मान भी मिल चुके हैं। दिव्यांग बच्चों के लिए किए जाने वाले विशेष काम के लिए उन्हें केविन केयर एबीलिटी अवॉर्ड फॉर एनीमेंस नेशनल अवॉर्ड 2015 से नवाजा गया। उनको यह अवॉर्ड आस्कर पुरस्कार विजेता सुप्रसिद्ध संगीतकार ए आर रहमान ने चेन्नई में आयोजित एक कार्यक्रम में दिया। सामाजिक और विकलांगता के क्षेत्र में काम करने वाली एकलौती दिव्यांग महिला के रुप में सविता को इस पुरस्कार के लिए चुना गया।

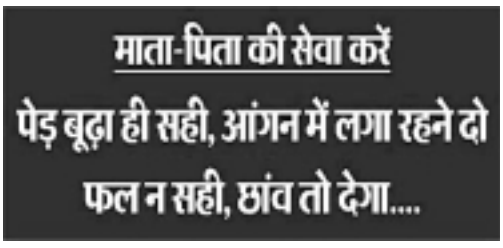

पिता को भरण पोषण राशि नहीं देने पर पुत्रों को तत्काल मकान खाली करने के निर्देश

जयपुर (कासं)। उपखण्ड मजिस्ट्रेट जयपुर शहर दक्षिण बिरदीचंद गंगवाल ने वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण अधिनियम 2007 के तहत अपने बुजुर्ग पिता सहेन्द्र लाल त्रेहन को भरण पोषण राशि नहीं देने पर एक आदेश पारित कर दोनों पुत्रों संजय व पंकज को तत्काल अपने पिता का मकान खाली करने के निर्देश दिये है। गंगवाल ने बताया कि सहेन्द्र लाल त्रेहन उम्र 83 वर्ष निवासी मकान नम्बर बी-एक श्रीराम मार्ग श्याम नगर निवासी ने अपने पुत्र संजय त्रेहन व पंकज त्रेहन के खिलाफ एक प्रार्थना पत्र वरिष्ठ नागरिक अधिनियम के तहत प्रस्तुत किया था। इस पर संजय त्रेहन 6 सितम्बर 2016 एवं पंकज त्रेहन 27 सितम्बर 2016 को न्यायालय में पेश हुये तथा जवाब के लिये समय मांगा। प्रार्थी सहेन्द्र लाल त्रेहन की आजीविका का कोई साधन नहीं है तथा दोनों पुत्र मकान पर काबिज है जबकि प्रार्थी के साथ उसकी तलाकशुदा पुत्री व नातिन भी रहती है। उपखण्ड मजिस्ट्रेट न्यायालय की जांच में पाया गया कि वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण अधिनियम के तहत बुजुर्ग सहेन्द्र लाल को न तो कोई भरण पोषण राशि का भुगतान करना चाहते है न ही आदर सम्मान देते है। जो एक वरिष्ठ नागरिक के जीवन यापन के अधिकारों का हनन है। न्यायालय ने सुनवाई करते हुये बुजुर्ग के दोनों पुत्रों को आदेशित किया कि वे अपने पिता के मकान को तत्काल खाली करें।

पेंशन के आवेदन पत्र ऑफ लाइन के साथ ऑनलाइन भी भरे जा सकेंगे

जयपुर(कासं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉक्टर अरुण चतुर्वेदी ने बताया कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लिए राज्य में ऑफ लाइन आवेदन प्रक्रिया के साथ ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने की सुविधा भी उपलब्ध होगी। पात्र आवेदक अपने नजदीकी ई मित्र केंद्र पर जाकर पेंशन पाने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। डॉ. चतुर्वेदी ने बताया कि कंप्यूटराइजेशन के वर्तमान दौर में अधिकांश कार्य पेपर लेस की ओर अग्रसर है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित छात्रवृत्ति योजना, छात्रावास प्रवेश योजना, अनुप्रति योजना, अंतरजाति विवाह योजना, आवासीय विद्यालय प्रवेश आदि योजनाएं ऑनलाइन की जा चुकी है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने बताया कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना अत्यंत गरीब निर्धन तबके के लिए होती है। हो सकता है प्रक्रिया के प्रारंभिक चरणों में ऑनलाइन आवेदन करने में आवेदकों को थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन राज्य में लगभग 40 हजार ई मित्र केंद्र कियोस्क की सुविधा एवं नियमों की प्रक्रिया में परेशानी एवं सुधारात्मक कदमों को दृष्टिगत रखते हुए आवेदन पत्र ऑनलाइन करने का प्रयास किया जा रहा है । सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने बताया कि ऑफ लाइन आवेदन करने के पश्चात संबंधित कार्यालय द्वारा समय पर आवेदन पत्र का निस्तारण नहीं होता है।

दिव्यांग तैराक कुमारी रजनीश जोशी ने की मुख्यमंत्री डॉ.सिंह से सौजन्य भेंट

राजनांदगांव (विमं)। मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय राजनांदगांव में कुरूद जिला धमतरी निवासी कक्षा 10वीं में पढ़ने वाली दिव्यांग तैराक कुमारी रजनीश जोशी ने संस्था श्रद्धांजलि राजनांदगांव के माध्यम से मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह से सौजन्य भेंट की। कुमारी जोशी ने डॉ. सिंह को बताया कि जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ का परचम लहराकर प्रथम स्थान हासिल की है। मुख्यमंत्री डॉ. सिंह ने दिव्यांग तैराक रजनीश जोशी को अपनी शुभकामनाएं दी और उसे तैराकी के लिए हर संभव सहयोग प्रदान करने की बात कही। रजनीश बताया कि वे तैराकी और पढ़ाई के साथ.साथ खेल में भी रूचि रखती है। डॉण् सिंह ने कहा कि कुमारी जजनीश जोशी एक आंख से दिव्यांग होने के बाद भी यह उपलब्धि हासिल की हैए यह हमारे लिए गर्व की बात है। हमारे होनहार बच्चों को ऐसे लोगों से सीख लेनी चाहिए। उन्होनें इस उपलब्धि के लिए रजनीश जोशी को और बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

अरुणिमा फिर चढ़ेगी पर्वत पर

कोलकाता (विमं)। माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली दिव्यांग महिला अरुणिमा सिन्हा की योजना दिसंबर में एक और पर्वत पर चढ़ने की है। अरुणिमा राष्ट्रीर स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी हैं। ट्रेन में रात्री के दौरान डकैतों का विरोध करने पर उन्हें चलती ट्रेन से फेंक दिया गया था जिसके बाद 2011 में उनके एक पैर को काटना पड़ा था। उनकी योजना छह महाद्वीपों में छह पर्वतों पर चढ़ने की है। मेरा लक्ष्य छह महाद्वीपों में छह पर्वतों पर चढ़ने का है। उक्त बातें साइंस सिटी सभागर में न्यू टाउन स्कूल के वार्षिक कार्यक्रम के दौरान कहीं। पद्मश्री से सम्मानित अरुणिमा माउंट एवरेस्ट, माउंट किलिमंजारो, माउंट कोस्कियुस्जको और माउंट एकोनकगुआ पर्वतों पर चढ़ चुकी हैं। उन्होंने कहा कि उनका सपना पर्वतारोही बनने का था और अस्पताल में रहने के दौरान उन्होंने पूर्वतारोहियों के लेखों को पढ़ा, जिससे उनका सपना और मजबूत हुआ। अरुणिमा ने कहा कि उन्होंने पर्वतारोही बनने का फैसला किया और उनका परिवार सबसे बड़ी प्रेरणा बन गया। मेरी मां को शुरू में थोड़ी चिंता हुई, लेकिन मेरी इच्छा शक्ति को देखकर वह भी मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा बन गई। वार्षिक कार्यक्रम नेचर और माईथोलोजी थीम पर आधारित था। स्कूल की प्रिंसिपल शताब्दी जी.भट्टाचार्य ने पिछले साल की स्कूल की सारी उपलब्धियों पर एक वार्षिक रिपोर्ट पेश की। उन्होंने कहा कि स्कूल हर छात्रों के समावेशी विकास पर ध्यान देता है और हर वो मंच प्रदान करता है जिससे छात्रों की प्रतिभा बाहर आए। यह स्कूल शिक्षा में टैक्नोलोजी पर ज्यादा ध्यान रखता है जिससे छात्रों का विकास समय के साथ-साथ होता रहे और उनकी प्रर्दशन बेहतर होती जाए। उसके बाद छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आरंभ हुआ जिसमें छात्रों ने रामायण, संस्कृत श्लोक और प्रकृति पर आधारित गान प्रस्तुत किये। छात्रों में पुरस्कार वितरण किया गया और अंत में राष्ट्रगान के साथ इस कार्यक्रम की समाप्ति हुई। कार्यक्रम में स्कूल के डायरेक्टर सुनील अग्रवाल, संजय खेमका, सीईओ विनीत कनसाल उपस्थित थे।

बधिरांध बच्चों के लिए स्टेट रिसोर्स सेंटर की शुरुआत

अजमेर। राजस्थान महिला कल्याण मंडल संस्था चाचियावास के द्वारा सेंस इंटरनेशनल के सहयोग से बधिरांध बच्चों के लिए बी-221, क्रिस्तिगंज थाने के पीछे, माकडवाली रोड, पंचशील नगर अजमेर में स्टेट रिसोर्स सेण्टर की शुरुआत 1 मई 2017 से की गई है। संस्था के निदेशक राकेश कुमार कौशिक ने बताया की बधिरान्ध बच्चों के लिए काम करने वाली इंटरनेशनल संस्था सेंस इंटरनेशनल के सहयोग से अजमेर में बधिरान्ध बच्चों के लिए राजस्थान का पहला व एक मात्र रिसोर्स सेण्टर स्थापित किया जा रहा है। जहाँ पर बधिरांध बच्चों को विशेष शिक्षा, साईन लैंग्वेज, सेंसरी स्टुमिलेसन, मोबिलिटी ट्रेनिंग आदि सिखाया जायेगा। कौशिक ने यह भी बताया की 1 से 35 वर्ष के जो बच्चे एवम वयस्क सुन नहीं सकते और साथ में देख नहीं पाते है या जिन्हें कम दिखाई देता है ऐसे लोग 9462327384, 9829140992 संपर्क कर केंद्र पर आकर अपना पंजीकरण करवा सकते है। कार्यक्रम प्रभारी तरुण शर्मा ने बताया की संस्था द्वारा डे केयर सेण्टर एवं समुदाय आधारित सुविधाए उपलब्ध करवाई जाएगी।

सहवाग की मदद से अपने पैरों पर खड़ा हो पाया दिव्यांग

नई दिल्ली (विमं)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने एक ऐसा काम किया, जिसे जानने के बाद हर कोई इन्हें सलाम कर रहा हैं। जी हां, इनकी फाउंडेशन ने एक दिव्यांग को नई जिंदगी दी है। इस बात की जानकारी वीरेन्द्र सहवाग ने सोशल साइड ट्वीट के जरीए दी। सहवाग ने अपने ट्वीट पर लिखा कि अब संजीव (दिव्यांग) अपने पैरों पर खड़ा हो सकेंगे और अपने सपनों को पूरा कर सकेंगे।

मैं उन सभी लोगों का थैंक्स कहता हूं, जिन्होंने संजीव की सहायता की। इस कार्य पर उनके फैंस ने उनकी जमकर तारीफ की। हाल ही में उन्होंने अपने ट्वीट कर रूपा देवी और संजीव की तस्वीर शेयर करते हुए लोगों से अपनी चैरिटी संस्था सहवाग फाउंडेशन के जरिए उनकी मदद की अपील की थी। आपको बता दें कि रूपा का एक पैर किसी दुर्घटना के कारण से कट गया था। इसके बाद काफी लोगों ने उस महिला के उपचार के लिए हेल्प किया था। इसी तरह संजीव का भी लोगों ने हेल्प किया। सहवाग के इस काम की सोशल मीडिया पर खूब सराहना हो रही है। सोशल मीडिया यूजर्स सहवाग और उनके फाउंडेशन के इस काम के लिए उनकी प्रशंसा कर रहे हैं। सहवाग इससे पहले एक विकलांग महिला को भी इसी तरह से अपने पैरों पर खड़ा कर चुके हैं। इस बात की जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया अकाउंट पर दी थी। हाल ही में सहवाग ने अपने ट्वीट कर एक महिला रूपा देवी और संजीव की फोटो शेयर करते हुए लोगों से उनकी मदद की अपील की थी। रूपा का एक पैर किसी दुर्घटना की वजह से कट गया था।

अब इस पोर्टल के माध्यम से दिव्यांग भी कर सकेंगे पूरी दुनिया की सैर

नई दिल्ली (विमं)। दुनिया देखने की इच्छा रखने के बावजूद शारीरिक अक्षमता तथा सुविधाओं के अभाव के कारण ऐसा नहीं कर पाने वाले दिव्यांगों के लिए पर्यटन कंपनी कॉक्स एंड किंग्स ने अपना विशेष पोर्टल इनेबलट्रैवलडॉटकॉम लांच किया। कंपनी के रिलेशनशिप प्रमुख करण आनंद तथा इनेबल ट्रैवल के प्रमुख देबोलीन सेन ने पाँच आमंत्रित दिव्यांगों की मौजूगी में यह पोर्टल लांच किया। इसके तहत बुकिंग कराने वालों को विशेष रूप से तैयार ह्वीलचेयर, बधिरों के लिए संकेत भाषा के दुभाषिए, दृष्टिबाधितों के लिए

एस्कॉर्ट आदि की व्यवस्था होगी। आनंद ने बताया कि अब ह्वीलचेयर पैर बैठे होने के बावजूद दिव्यांग भी पानी के खेलों के मजे ले सकेंगे। वे ऐतिहासिक इमारतों की छत से आसपास के नजारे देख सकेंगे। उनके पास फोल्ड किए जा सकने वाले विशेष रैंप हैं जिसे कहीं भी खोलकर ह्वीलचेयर को सीढ़ियों पर ले जाया जा सकता है। पैरों से दिव्यांग अतिथियों में से एक शमा ने बताया कि दस साल विदेश में रहकर भारत आने पर उन्होंने देखा कि यहाँ उन जैसे लोगों के अनुरूप ढाँचे नहीं हैं तथा काफी कुछ किए जाने की जरूरत है।

रूस्तम ईरानी ने कहा कि विदेशों में ही नहीं देश में भी लोग मदद के लिए तैयार रहते हैं, लेकिन पहले इस दिशा में पहल करने की जरूरत होती है। उन्होंने इनेबल ट्रैवल को अच्छी पहल बताते हुए कहा कि इससे अधिक संख्या में दिव्यांग घरों से बाहर निकलेंगे जिससे उनके लिए सुविधाएँ बढ़ाने की जरूरत महसूस की जाएगी। वायुसेना में पायलट रह चुके कैप्टन (सेवानिवृत्त) प्रबल ने कहा कि कभी मिग-25 विमान उड़ाने के आदि हो चुके व्यक्ति के लिए ह्वीलचेयर की मंद रफ्तार वाकई कष्टदायक है, लेकिन उन्होंने अपनी हिम्मत नहीं हारी है।

हैल्दी माइंड के लिए खेलकूद जरूरी

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने बच्चों से कहा कि वे टीवी, फेसबुक, ट्वीटर और अन्य सोशल मीडिया से बाहर आकर कुछ समय खेलकूद गतिविधियों को दें। उन्होंने कहा कि खेलकूद और शारीरिक व्यायाम न केवल शरीर को स्वस्थ बनाता है बल्कि हैल्दी माइंड के लिए भी यह बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि अभिभावक बच्चों को खेलकूद गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित करें। श्रीमती राजे सवाई मानसिंह स्टेडियम में राज्य क्रीडा परिषद और श्री गणेश मन्दिर, मोती डूंगरी ट्रस्ट की ओर से आयोजित तैराकी प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं आयोजित करना अच्छी पहल है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजन से ही प्रतिभाओं को आगे आने का मौका मिलता है और यहीं से चैम्पियन निकलते हैं। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग ले रहे चौथी कक्षा से लेकर 9वीं कक्षा तक के करीब 400 बच्चों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि वे प्रतियोगिता में अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करें। श्रीमती राजे ने विभिन्न वर्गों में आयोजित तैराकी प्रतियोगिता को देखा और छोटे-छोटे बच्चों द्वारा किये गये प्रदर्शन को सराहा। उन्होंने इस अवसर पर विभिन्न वर्गों के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया। इससे पहले मोती डूंगरी गणेश मन्दिर के मंहत कैलाश शर्मा ने स्वागत उद्बोधन दिया। इस अवसर पर खेल एवं युवा मामलात मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, विधायक अशोक परनामी, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश महेश चन्द्र शर्मा, अतिरिक्त मुख्य सचिव खेल विभाग जेसी महान्ति एवं जी मीडिया रीजनल चैनल्स के सीईओ जगदीश चंद्र सहित अन्य उपस्थित थे।

बालगृहों के बच्चों को मेनस्ट्रीम से जोड़ने के प्रयास करने होंगे:लाकुर

जयपुर (कासं)। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति मदन वी. लोकुर ने समाज में जागरूकता व सहभागिता जगाने पर बल देते हुए कहा कि हमें बच्चों से जुड़े अपराधों व उनके अधिकारों के विषय पर खुलकर हर स्तर पर बात करनी चाहिए। हमें बालगृहों के बच्चों को समाज में मेनस्ट्रीम से जोड़ने के प्रयास सामाजिक व राज्य स्तर पर पूरी संवेदना के साथ करने की आवश्यकता है।

न्यायाधिपति लोकुर सीतापुरा में होटल क्राउन प्लाजा में आयोजित तृतीय उत्तर क्षेत्र गोलमेज परामर्श कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। यह दो दिवसीय कार्यक्रम इफेक्टिव इम्पलीमेंटेशन ऑफ द जुवेनाइल जस्टिस (केयर एण्ड प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन) एक्ट 2015 फोकस ऑन रिहेबिलिटेशन सर्विसेज एण्ड लिंकिजेज द पोक्सो एक्ट 2012 के विषय पर आयोजित किया गया था। उन्होंने बताया कि इन दोनों एक्ट के सफल क्रियान्वयन के लिए हर स्तर के अधिकारी व सबसे पहले पुलिस को इन एक्ट्स को संवेदनशीलता के साथ समझना बेहद जरूरी है। हमें इस विषय में पूरे विश्व में जो स्टेन्डर्ड ओपरेटिव संस्थाएं काम कर रही हैं उनके तरीकों को समझना होगा और जानना होगा कि कैसे हम बालगृहों व पुनर्वास केन्द्र के बच्चों का विकास कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जोधपुर विधि विश्वविद्यालय में इस विषय के कोर्स पढ़ाकर किशारों को भी जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह बच्चे भी हमारे बच्चों की तरह ही हैं इन्हें प्यार, अपनापन और सही मार्गदर्शन से हम अच्छे जिम्मेदार नागरिक बनाने का कर्त्तव्य निभाएं।

उन्होंने कहा कि सही तरह से जानना बेहद आवश्यक है कि किसी भी बच्चे से अपराध किन हालात में हुआ क्योंकि यह उसके भविष्य का सवाल है। ऐसे बच्चों के प्रति समाज को भी अपना नजरिया संवेदनशील करना होगा।

Hon'ble Chief Minister of Rajasthan
VASUNDHARA RAJE
Inaugurates
SMT KAMLA DEVI BUDHIA RAJKIYA UCHH MADHYAMIK VIDYALAYA
(Donated by Sri H P Budhia in memory of his mother)

GUESTS OF HONOUR

SRI KALI CHARAN SARAF
Minister for Higher Education
Govt. of Rajasthan

SRI VASUDEV DEVNANI
Minister for Education - Primary & Secondary
Govt. of Rajasthan

FOR A BETTER, BRIGHTER & SAFER FUTURE
FOUNDATION OF STUDENTS
TO LEAD TOMORROW

- Co-Ed School from Classes I – XII
- G+4 Building with 30 Modern Rooms
- Equipped with Library, Laboratories, Computer Room etc.
- Big Assembly Hall
- Fully guarded with boundary wall to ensure safety of students

1000 Students Both Boys & Girls

Smt Kamla Devi Budhia Rajkiya Uchh Madhyamik Vidyalaya
Heerapura, Jaipur, Rajasthan / Contact: 9830046410 / Email: magarwal@pattonindia.com